www.adbhutsamachar.com

# अद्भुत समाचार

वर्ष – 15 | अंक–218 | RNI-No. : UPHIN/2011/43806 | लखनऊ, सोमवार 13 जुलाई 2026 | प्रातः कालीन संस्करण | (हिन्दी दैनिक) | पृष्ठ–4 | मूल्य 1 रुपया

## यूपी में शिक्षण संस्थानों ने लिया हरियाली का संकल्प, महाभियान में एक दिन में रोपे 43 लाख पौधे

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चले 35 करोडघ पौधारोपण अभियान में शिक्षा विभाग ने 43 लाख पौधे लगाकर बडघी भागीदारी निभाई।

बेसिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा विभाग के विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में एक साथ हुए अभियान में विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, जनप्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों ने हिस्सा लिया।बेसिक शिक्षा विभाग के तहत 12 लाख पौधे परिषदीय विद्यालयों,

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी), ब्लाक संसाधन केंद्र (बीआरसी), संकुलों और अन्य शैक्षणिक परिसरों में लगाए गए। शिक्षकों, विद्यार्थियों, स्कूल प्रबंधन समितियों, अभिभावकों और स्थानीय समुदाय ने भी सहयोग किया।महानिदेशक स्कूल शिक्षा व अभियान की नोडल अधिकारी मोनिका रानी ने झांसी में कार्यक्रमों का निरीक्षण किया।

माध्यमिक शिक्षा विभाग ने 11 लाख पौधे राजकीय, सहायता प्राप्त, वित्तविहीन, संस्कृत, व्यावसायिक विद्यालयों और जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालयों में लगाए।उच्च शिक्षा विभाग ने सर्वाधिक 20 लाख पौधे राजकीय, सहायता प्राप्त और निजी महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों व अन्य संस्थानों में रोपे। लखनऊ के 18 पार्क रोड स्थित शिविर कार्यालय और निशातगंज स्थित एससीईआरटी परिसर में भी वरिष्ठ अधिकारियों ने पौधरोपण किया।

## रोहित मिश्रा के काफिले ने लगाया जाम, तलवार लहराते दिखे युवा मोर्चा अध्यक्ष

लखनऊ। एक ओर प्रधानमंत्री ने मंत्रियों, विधायकों और जन प्रतिनिधियों और आम लोगों से राष्ट्रहित में ईंधन बचाने और काफिले में कम गाड़ियां लेकर चलने की अपील की है। दूसरी ओर भारतीय जनता युवा मोर्चा के नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष रोहित मिश्रा रविवार को सैकड़ों गाड़ियों के साथ हजरतगंज स्थित भाजपा के प्रदेश मुख्यालय में पदभार ग्रहण करने पहुंचे। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने जियामऊ पेट्रोल पंप के पास सड़क पर उनके स्वागत के लिए टेंट लगाया।कार्यकर्ताओं ने उन्हें तलवार और गदा भेंट किया। प्रदेश अध्यक्ष ने तलवार लहराई। लंबे काफिले के कारण रविवार

होने के बाद भी 1090 से भाजपा मुख्यालय तक दोपहर में जाम लगा रहा। रविवार को भाजपा मुख्यालय में उनका पदभार ग्रहण कार्यक्रम था। इसे लेकर सुबह से ही 1090 चौराहे से लेकर भाजपा मुख्यालय तक प्रदेश के अलग–अलग शहरों से कार्यकर्ता पहुंचे। बड़ी संख्या में वाहनों के आने से 1090 चौराहा, जिया मऊ, पार्क रोड, हजरतगंज चौराहा, धेनुमति अपार्टमेंट और आसपास के इलाकों में वाहनों की कतार लग गई। दोपहर में गोल्फ क्लब चौराहे के पास कई गाड़ियां लेकर कार्यकर्ता पहुंचे और बेतरतीब गाड़ियां खड़ी कर रील बनाने लगे। नतीजतन, लोहिया पथ पर लंबा जाम लग गया। मौके पर तैनात पुलिसकर्मियों को यातायात सुचारू कराने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी।

प्रदेश अध्यक्ष के जियामऊ पेट्रोल पंप के पास पहुंचने पर क्रेन पर माला टांगकर कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। इस बीच एक कार्यकर्ता ने उन्हें तलवार और गदा भेंट किया। उन्होंने चलती गाड़ी पर तलवार लहराई। कड़ी में धूप में स्वागत के चलते सड़क पर काफी देर तक यातायात बाधित हुआ जिससे लोगों को समस्या का सामना करना पड़ा।

## *बिखरे रहे पारिवारिक और समाजिक संबंध सिमटता परिवार, निपटते रिश्ते, सिसकता अकेले*

लखनऊ 12 जुलाई। संयुक्त परिवार की व्यवस्था से अलग आज एकल परिवार में सदस्यों को संबल देने वालों का अकाल सा है, ऐसे में रिश्ते टूट और बिखर ज्यादा रहे हैं। व्यक्ति तनाव

और अवसाद का शिकार हो रहे हैं।

ये कहना था मुख्य अतिथि राम कथा वाचक धीरेन्द्र वशिष्ठ का। उन्होंने कहा कि समाज मनुष्य को भ्रष्ट करता है मनुष्य अबोध बालक के रूप में जनम लेता है। जो स्वभाव से सरल और सीधा होता है। समाज में आने के बाद संपत्ति, लालच और ऊंच–नीच की भावना उसका स्वभाव परिवर्तित करके भ्रष्ट बना देती है। मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन हर जगह वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।

परिवारिक और सामाजिक संबंधों का वर्तमान स्वरूप विषय पर संगोष्ठी का आयोजन अवध फाउण्डेशन की ओर से जानकीपुरम कार्यालय सभागार सभागार में किया गया था।

अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्था के अध्यक्ष सूरजदेव शुक्ल ने कहा कि वर्तमान परिवेश में सतयुग से कलियुग तक पारिवारिक संबंधों का निरंतर पतन होता गया। इसे सुधारने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन करने के पश्चात बीना मिश्रा के शिष्यों अराध्या मिश्रा, अद्वैत मिश्रा, साक्षी मिश्रा, रचित मिश्रा द्वारा के श्रीराम स्तुति व हनुमान चालीसा के पाठ से हुआ स रामप्रकाश त्रिपाठी के संचालन में डॉ काशीनाथ पांडेय ने कहा परिवार के बिना शिक्षा, ज्ञान, विकास किसी बच्चे का नहीं हो सकता। प्राचीन भारतीय संस्कृति सभी अपने कर्तव्य बताती थी, लेकिन प्रदूषित पाश्चात्य संस्कृति अधिकार सिखा रही है, जो पतन का कारण है।बीना मिश्रा ने रामायण के चरित्रों को काव्य में ढालकर परिवार का महत्व बताया। बीरेन्द्र श्रीवास्तव ने समाज और देश की ईकाई परिवार को बताया।

कार्यक्रम में शिक्षाविद्, समाजसेवी, बुद्धिजीवी और युवाओं के संग काशीनाथ पाण्डेय, आरडी शुक्ला, शिवकुमार पांडेय, छठ कुमार शुक्ला, आर सी त्रिपाठी, जानकी शरण शुक्ला, प्रणव दत्ता, प्रकाश चन्द्र शर्मा जी,राकेश तिवारी, केसर सिंह, बीना मिश्रा, राम दयाल शुक्ला, शिवकुमार पांडेय, जानकी शरण शुक्ला, टीएन शुक्ला, लक्ष्मी नारायण दीक्षित ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

## मानसून सत्र में राम मंदिर चढावा और नीट पेपर लीक का मुद्दा उठाएगा इंडिया गठबंधनः सुधाकर सिंह

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के सांसद सुधाकर सिंह ने कहा है कि इंडिया गठबंधन आगामी संसद के मानसून सत्र में राम मंदिर के चढघवे से जुडघे मामले और नीट पेपर लीक जैसे गंभीर मुद्दों पर केंद्र सरकार को घेरेगा। इसके साथ ही, विपक्षी दलों में फूट डालकर दो–तिहाई बहुमत हासिल करने की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कथित कोशिशों का भी कडघ विरोध किया जाएगा। संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से शुरू होकर 13 अगस्त तक चलेगा।

बिहार के बक्सर से सांसद सुधाकर सिंह ने आरोप लगाया कि भाजपा अपने विधायी एजेंडे को आगे बढघने के लिए जरूरी संख्या बल जुटाने के उद्देश्य से विपक्षी दलों को कमजोर करने की राजनीतिक रणनीति अपना रही है।

उन्होंने कहा कि भाजपा देशभर में विपक्षी दलों को तोडघकर संसद में दो–तिहाई बहुमत हासिल करना चाहती है, लेकिन श्इंडियाश गठबंधन पूरी मजबूती के साथ इसका विरोध करेगा।सांसद सुधाकर सिंह के अनुसार, विपक्ष संसद में हर महत्वपूर्ण मुद्दे को प्रमुखता से उठाएगा। इसमें राम मंदिर के चढघवे की चोरी और पेपर लीक से लेकर बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) जैसे विषय शामिल हैं। हाल के दिनों में विपक्षी सांसदों के पाला बदलने की खबरों और अटकलों पर उन्होंने कहा कि यह पूरे श्इंडियाश गठबंधन के लिए चिंता का विषय है। भौगोलिकसंदर्भराजद नेता ने आरोप लगाया कि पहले दल–बदल कानून के दायरे में रहकर होता था, लेकिन आज ऐसा लगता है कि नियमों और सुरक्षात्मक उपायों को भी पूरी तरह नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सत्ताधारी दल के पास अपने दम पर पर्याप्त संख्या बल नहीं है, इसलिए वह विपक्षी प्रतिद्वंद्वियों को कमजोर करने में जुटा है, जिससे पूरा विपक्ष चिंतित है। उन्होंने इन कोशिशों को संविधान को कमजोर करने की एक बडघी साजिश का हिस्सा बताया।सुधाकर सिंह ने यह भी कहा कि साल 2024 का लोकसभा चुनाव संविधान बचाने के मुद्दे पर लडघ गया था। आज भाजपा के कदमों और नए कानूनों से यह साफ दिख रहा है कि संविधान को कैसे कमजोर किया जा रहा है। उन्होंने निर्वाचन आयोग की एसआईआर प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए इसे नागरिकों के वोटिंग अधिकार पर हमला बताया और कहा कि अगर मतदाता सूची से असली मतदाताओं के नाम हटा दिए जाएं, तो सरकारों को बैलेट के बजाय मतदाता सूची के जरिए बदला जा सकता है।

राजद सांसद ने साफ किया कि विपक्ष श्एक देश, एक चुनावश और परिसीमन जैसे कदमों का संसद में पुरजोर विरोध करेगा, क्योंकि ये लोकतांत्रिक अधिकारों को कमजोर करते हैं। इसके अलावा, उन्होंने नीट पेपर लीक को एक श्राष्ट्रीय संकटश बताते हुए जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक और कॉकरोच जनता पार्टी के नेतृत्व में जंतर–मंतर पर चल रहे विरोध प्रदर्शन का भी पूरा समर्थन किया।

## बीआरसी इटौंजा में वृहद वृक्षारोपण अभियान, 75वें जन्मदिवस पर शैल सिंह राठौर ने लगाया एक पेड़ माँ के नाम पौधा

लखनऊ। प्रदेशव्यापी वृक्षारोपण महायज्ञ–2026 एवं एक पेड़ माँ के नामश अभियान के अंतर्गत विकासखंड बक्शी का तालाब (बीकेटी) स्थित ब्लॉक संसाधन केंद्र (बीआरसी) इटौंजा में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया तथा उनके संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम में नगर पंचायत इटौंजा के अध्यक्ष अवधेश कुमार अवस्थी, खंड शिक्षा अधिकारी बीकेटी प्रीती शुक्ला, शैल सिंह राठौर एवं अनुराग सिंह राठौर ने संयुक्त रूप से अशोक, सहजन, मीठी नीम और इमली के पौधों का रोपण किया।

इस अवसर पर शैल सिंह राठौर के 75वें जन्मदिवस को यादगार बनाते हुए श्एक पेड़ माँ के नामश अभियान के तहत विशेष रूप से एक पौधा रोपा गया। उपस्थित सभी लोगों ने पौधों की नियमित देखभाल और संरक्षण का संकल्प लेते हुए पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी ली।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि वृक्ष मानव जीवन का आधार हैं। बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि श्एक पेड़ माँ के नामश अभियान प्रकृति और मातृत्व के प्रति सम्मान व्यक्त करने के साथ–साथ समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने का सशक्त माध्यम बन रहा है।

इस अवसर पर अंकित अवस्थी, आलोक राय, कन्हैया कुमार क्रांति, ओमप्रकाश सहित अनेक गणमान्य नागरिक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने प्रदेश को हरित, स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल बनाने में सक्रिय योगदान देने का संकल्प दोहराया।

## नया पुलिस कमिश्नर, अमरेंद्र सिंह सेंगर का डीजी पद पर प्रमोशन तय

लखनऊ। लखनऊ को जल्द ही नया पुलिस कमिश्नर मिलेगा। मौजूदा पुलिस कमिश्नर अमरेंद्र सिंह सेंगर को सोमवार को डीजी के पद पर पदोन्नत किया जा सकता है।उनके स्थान पर लखनऊ में नए पुलिस कमिश्नर की तैनाती को लेकर शासन में मंथन चल रहा है। उम्मीद है कि एक–दो दिनों में ही शासन द्वारा नए पुलिस कमिश्नर की तैनाती के आदेश जारी कर दिए जाएंगे।उन्हें अगले माग पदोन्नत किया जाना था, लेकिन डीजी फायर सर्विस सुजीत पांडेय को केंद्रीय प्रतिनियुक्त पर सरदार वल्लभ पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी का निदेशक बनाए जाने के बाद अमरेंद्र सिंह सेंगर की पदोन्नति की रास्ता एक माह पहले ही खुल गया है।शासन ने बीते दिन सुजीत पांडेय को रिलीव कर दिया है। हालांकि अमरेंद्र सिंह सेंगर की पदोन्नति 30 अगस्त को डीजी ए मुथा जैन के सेवानिवृत्त होने के बाद की जानी थी।

## एक पेड़ माँ के नाम 3.0 अभियान के तहत बेसिक विद्यालय अलीनगर सुनहरा में हुआ वृक्षारोपण, प्रधानाध्यापक बोले–पेड़ हैं जीवन और भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी

लखनऊ। प्रदेशव्यापी श्एक पेड़ माँ के नाम 3.0श अभियान के अंतर्गत परिषदीय बेसिक विद्यालय अलीनगर सुनहरा में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में आम, पपीता, नीम और अमरूद के पौधे रोपकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया।एक्ज़िक्यूटिव ब्रांच

कार्यक्रम में प्रभारी प्रधानाध्यापक राकेश कुमार पाण्डेय, शिक्षामित्र सुनीता यादव तथा विद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्ष श्रीमती पप्पी राजपूत ने संयुक्त रूप से पौधारोपण किया। इसके साथ ही सभी ने लगाए गए पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का संकल्प भी लिया।

इस अवसर पर प्रभारी प्रधानाध्यापक राकेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि ष्पेड़ केवल हमें ऑक्सीजन ही नहीं देते, बल्कि स्वच्छ पर्यावरण, शुद्ध वायु, वर्षा, जैव विविधता और आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य का आधार भी हैं। यदि आज हम अधिक से अधिक वृक्ष लगाएंगे और उनका संरक्षण करेंगे, तभी पर्यावरण संतुलित रहेगा और पृथ्वी को प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकेगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उसकी देखभाल अपनी जिम्मेदारी समझकर करनी चाहिए।

उन्होंने विद्यार्थियों को वृक्षों के महत्व से अवगत कराते हुए प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया और सभी से एक पेड़ माँ के नाम अभियान से जुड़ने की अपील की।कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिवार एवं उपस्थित लोगों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया और अधिक से अधिक पौधे लगाकर उन्हें सुरक्षित रखने का संदेश दिया। विद्यालय परिसर में लगाए गए पौधे भविष्य में हरित वातावरण के निर्माण के साथ विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

# सम्पादकीय

## चुनौती के समाधान के लिए प्रयास जरूरी

सत्तर साल पहले तक पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह चंद्रमा था। आज पृथ्वी की कक्षा में 15 हजार से अधिक उपग्रह मौजूद हैं, जिनमें लगभग 10 हजार केवल एलन मस्क के स्पेसएक्स के हैं। आने वाले वर्षों में उनके द्वारा लाखों नए उपग्रह लॉन्च करने की योजनाएं इस भीड़ को और बढा सकती हैं। लेकिन, इस विस्तार के साथ अंतरिक्ष में कचरे का संकट भी तेजी से गहराता जा रहा है।

इस चुनौती के समाधान के लिए तीन स्तरों पर समानांतर प्रयास जरूरी हैं—अत्याधुनिक तकनीक, प्रभावी नीतियां और जिम्मेदार सोच। अंतरिक्ष कचरे में निष्क्रिय उपग्रह, इस्तेमाल हो चुके रॉकेटों के हिस्से और टूटे हुए अंतरिक्ष यानों के टुकड़े शामिल हैं। पृथ्वी की कक्षा में 10 सेंटीमीटर से बड़े करीब 36 हजार टुकड़े व करोड़ों सूक्ष्म कण मौजूद हैं। ये लगभग सात किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से पृथ्वी का चक्कर लगाते हैं। इतनी तेज गति के कारण एक छोटी—सी टक्कर भी हजारों नए टुकड़ों को जन्म दे सकती है। यही स्थिति 'केसलर सिंड्रोम' का कारण बनती है, जिसमें एक टक्कर से पैदा हुआ मलबा दूसरी टक्करों को जन्म देता है। यह सिलसिला लगातार चलता रहता है। इसी कारण, अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को भी हर वर्ष मलबे से बचने के लिए अपनी दिशा बदलनी पड़ती है। अब तक पुरानी अंतरिक्षीय वस्तुओं को पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश कराकर जलाना सबसे सामान्य समाधान माना जाता रहा है। हालांकि, वैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रक्रिया से निकलने वाली कालिख और एल्युमिना के कण ओजोन परत के लिए नुकसानदायक साबित हो सकते हैं। इसी खतरे को देखते हुए वैज्ञानिक सक्रिय मलबा निष्कासन (एक्टिव डेब्रिस रिमूवल) तकनीक पर काम कर रहे हैं। चुंबक, हारपून व अन्य आधुनिक प्रणालियों की मदद से निष्क्रिय उपग्रहों को हटाने के प्रयास जारी हैं। साथ ही, ऐसे उपग्रह विकसित किए जा रहे हैं, जो अधिक टिकाऊ हों या मिशन पूरा होने के बाद आसानी से नष्ट किए जा सकें। दूसरी ओर, अंतरिक्ष मलबा नियंत्रण और स्पेस ट्रैफिक मैनेजमेंट जैसी नीतियों को भी मजबूती दी जा रही है। फिर भी, सबसे बड़ा बदलाव हमारी सोच में आना चाहिए। यदि हम पृथ्वी के साथ—साथ अंतरिक्ष के प्रति भी जिम्मेदारी नहीं निभाते, तो भविष्य में अंतरिक्ष तक हमारी पहुंच भी संकट में पड़ सकती है। इसलिए, अंतरिक्ष के कचरे का मुद्दा पूरी मानवता के सुरक्षित भविष्य से जुड़ी एक बड़ी चुनौती है।

## संतुलन ही मनुष्य को परिपक्व बनाता है, भीतर का मौन सुनिए

मनुष्य अपने भीतर दो संसार लेकर चलता है। एक संसार वह जो दिखाई देता है और जिसे लोग उसके नाम, काम, परिवार, सफलताओं और असफलताओं के रूप में जानते—पहचानते हैं। दूसरा संसार अदृश्य है। वहां कोई दर्शक नहीं होता। वहां केवल मनुष्य और उसका मौन होता है। वहीं उसके वे प्रश्न भी रहते हैं, जिन्हें उसने कभी किसी से जाहिर नहीं किया, वे सपने जिन्हें उसने परिस्थितियों के कारण दबा दिया, वे भय जिन्हें वह मुस्कान के पीछे छिपा लेता है और वह सूक्ष्म पुकार जो उसे बार—बार याद दिलाती है कि उसका जीवन केवल बाहरी उपलब्धियों का हिसाब नहीं है। लोग अक्सर पहले संसार को संवारने में इतने मशगूल हो जाते हैं कि दूसरा संसार धीरे—धीरे अंधेरे में डूबता जाता है। वे घर बनाते हैं, पर अपने भीतर लौटने का कोई घर नहीं बनाते। वे सम्मान कमाते हैं, पर आत्म—सम्मान खो देते हैं। वे सबकी अपेक्षाएं पूरी करते हैं, पर अपनी आत्मा की सबसे छोटी इच्छा भी सुन नहीं पाते। एक दिन वे पीछे मुड़कर देखते हैं और पाते हैं कि उन्होंने जीवन तो बहुत जिया, पर खुद को बहुत कम जाना।

अक्सर लोग मुझसे पूछते हैं कि शांति क्या पहाड़ों, जंगलों में मिलती है, या फिर किसी आश्रम में। मैं कहता हूं यदि तुम्हारे भीतर अशांति है, तो तुम उसे हर जगह साथ ले जाओगे। और यदि तुम्हारे भीतर शांति है, तो बाजार का शोर भी उसे नष्ट नहीं कर सकेगा। स्थान बदलने से पहले चेतना बदलनी पड़ती है। जीवन ने मुझे सिखाया है कि मनुष्य अपने भीतर के अंधकार से डरता है। इसलिए वह लगातार बाहर के शोर में उलझा रहता है। मौन उसे भयभीत करता है, क्योंकि मौन में वह स्वयं से मिलता है। लेकिन उसी मौन में वह दरवाजा भी है, जिसके पार आजादी है। जो अपने भीतर के भय को देखने का साहस करता है, वही अंततः उससे मुक्त होता है। इसलिए अपने भीतर की आवाज और बाहर की जिम्मेदारियों के बीच कभी भी युद्ध नहीं होने देना चाहिए। यदि आत्मा हमें करुणा सिखाती है, तो वह व्यवहार में दिखनी भी चाहिए। यदि हमें सत्य प्रिय है, तो वह केवल विचारों में नहीं, फैसलों में भी झलकना चाहिए। यदि भीतर प्रेम है, तो वह केवल भावना बन कर ही न रह जाए, वह संबंधों में भी सांस ले। मनुष्य उस वक्त विभाजित हो जाता है, जब उसका भीतर कुछ और चाहता है और वह बाहर कुछ और जीता है। यह विभाजन धीरे—धीरे थकान, निराशा और निरर्थकता के भाव को जन्म देता है। इसके विपरीत, जब भीतर का सत्य बाहर के जीवन में उतरने लगता है, तब साधारण काम भी अर्थपूर्ण लगने लगते हैं। यहां पूर्णता का अर्थ यह नहीं कि भीतर कोई संघर्ष न रहे। पूर्णता का अर्थ यह है कि हम अपने संघर्षों के साथ भी एक हो जाएं। अपने भीतर के मौन को सुनें, लेकिन संसार की पुकार से भी मुंह न मोड़ें। अपने स्वप्नों को बचाए रखें, लेकिन उन लोगों का हाथ भी थामे रखें, जो हमारे साथ चल रहे हैं। यही संतुलन मनुष्य को परिपक्व बनाता है।

# अपनी सोच एआई के हवाले न करें: जब हर जवाब तुरंत मिल जाए, तो नई खोजें कैसे जन्म लेंगी?

कल्पना कीजिए कि आपने गूगल या किसी एआई टूल पर एक सवाल पूछा। कुछ ही सेकंड में पूरा जवाब सामने आ गया। न किसी लिंक पर क्लिक करने की जरूरत, न अलग—अलग वेबसाइटों पर भटकने की। काम आसान हो गया, समय बच गया। लेकिन, क्या आपने कभी सोचा है कि इस सुविधा की कीमत पर हम कुछ खोते भी जा रहे हैं?

वर्तमान में अधिकतर गूगल सर्च में उपयोगकर्ता किसी भी वेबसाइट पर क्लिक ही नहीं करता। बस सवाल टाइप करता है, एआई से तैयार सारांश पढ़ता है और आगे बढ़ जाता है। यही तरीका कई अन्य एआई टूल्स भी अपना रहे हैं। पहले लोग जानकारी पाने के लिए अलग—अलग स्रोतों से पढ़ते थे। इस दौरान उन्हें कई नई और दिलचस्प बातें भी पता चल जाती थीं। अब यह खोजबीन धीरे—धीरे कम होती जा रही है। पर, क्या तेज जवाब मिलना हमेशा फायदेमंद होता है? जवाब है—नहीं। एआई टूल्स अब हर सवाल का जवाब तुरंत दे देते हैं। इससे नई बातें खोजने और जानने की हमारी जिज्ञासा धीरे—धीरे कम होती जा रही है।

करीब दस साल पहले मैं गूगल में काम करती थी। उस समय हम कंटेंट की उपयोगिता का आकलन इस आधार पर करते थे कि लोग उस पर कितना समय बिताते हैं, कितने लिंक खोलते हैं और कितनी गहराई तक पढ़ते हैं। तब गूगल लोगों को ज्यादा खोजबीन करने के लिए प्रोत्साहित करता था। लेकिन, अब उसके एआई उत्पाद उसी खोजबीन की जरूरत को कम करने के लिए बनाए जा रहे हैं।शोध बताते हैं कि जब किसी रोचक सवाल का जवाब मिलने में थोड़ा समय लगता है, तो उस दौरान मिली दूसरी जानकारी, उससे जुड़ी न होने वाली बातें भी हमें ज्यादा अच्छी तरह याद रहती हैं। दरअसल, जवाब का इंतजार करते समय दिमाग का रिवॉर्ड सिस्टम सक्रिय हो जाता है और हिप्पोकैंपस नई यादें बनाने के लिए अधिक तैयार रहता है। यानी, जिज्ञासा हमारे पूरे दिमाग को सीखने के लिए तैयार कर देती है। यह केवल उस सवाल का जवाब समझने में मदद नहीं करती, जिसे हम जानना चाहते हैं, बल्कि उससे जुड़ी दूसरी जानकारियों को भी बेहतर ढंग से ग्रहण करने में मदद करती है।जिज्ञासा एक खुली खिड़की की तरह काम करती है। जब तक यह खिड़की खुली रहती है, सीखने की प्रक्रिया गहरी व व्यापक होती जाती है। पर, यदि एआई कुछ ही सेकंड में जवाब दे दे, तो यह खिड़की समय से पहले ही बंद हो जाती है। आपको जवाब तो मिल जाता है, पर वह अवसर खो जाता है, जब कोई दूसरा लेख, नया विचार या दो अवधारणाओं के बीच अप्रत्याशित संबंध सामने आ सकता था। शोधकर्ता इसे इंसीडेंटल लर्निंग, यानी अनजाने में होने वाली सीख कहते हैं। इतिहास की कई बड़ी खोजें इसी प्रक्रिया का परिणाम रही हैं। जब लोग किसी सवाल के पीछे अधिक समय तक लगे रहते हैं, तब उन्हें ऐसी बातें भी पता चलती हैं, जिनकी उन्होंने कल्पना तक नहीं की होती। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण 1964 का है। भौतिक वैज्ञानिक अर्नो पेन्जियास और रॉबर्ट विल्सन ने अपने रेडियो एंटीना में एक अजीब—सी आवाज सुनी। वे उसे अनदेखा कर सकते थे, पर उन्होंने उसकी वजह तलाश की। इसी जिज्ञासा ने उन्हें बिग बैंग के बाद बची हुई कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड रेडिएशन की ऐतिहासिक खोज तक पहुंचा दिया।

आज की तकनीक सवाल—जवाब के बीच के समय को बेकार मानकर खत्म करना चाहती है, जबकि सीखने की प्रक्रिया इसी दौरान सबसे गहरी होती है। जब लोग कम खोजबीन करेंगे, तो धीरे—धीरे वे अपने दम पर नई खोज व नए विचार बनाने के बजाय तैयार जवाबों पर अधिक निर्भर हो जाएंगे। आज भी लोग इंटरनेट पर अलग—अलग वेबसाइट देख सकते हैं,।

# दतिया उपचुनाव: नरोत्तम के बहाने भाजपा में साठ पार वालों को कड़ा संदेश

मध्यप्रदेश की दतिया विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भाजपा द्वारा अपने दिग्गज नेता, पिछला विस चुनाव हारे तथा इस बार मंत्री पद की शपथ लेने का मंसूबा पाले डॉ. नरोत्तम मिश्रा को दरकिनार कर एक दूसरे ब्राह्मण और युवा नेता आशुतोष तिवारी को टिकट देकर न केवल नरोत्तम मिश्रा बल्कि पार्टी के उन तमाम साठ पार नेताओं को बड़ा संदेश दे दिया है कि वो अब बोरिया बिस्तर बांधने की तैयारी कर लें।

भाजपा में पिछले साल पीढ़ी परिवर्तन (दो शीर्ष नेताओं को छोड़कर) का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वो अब उपचुनावों में प्रत्याशी चयन में पल्लवित होता दिखाई दे रहा है। हालांकि आशुतोष तिवारी को टिकट देने की खबर सुनकर दतिया में नरोत्तम समर्थकों ने 12 घंटे तक बवाल मचाया, हिंसा और आगजनी की, लेकिन पार्टी आला कमान के सख्त तेवरों के आगे उसकी सुदर्शन छवि की भी एक न चली। झक मारकर नरोत्तम को आशुतोष का समर्थन करने का ऐलान करना पड़ा। वैसे अंदरखाने नरोत्तम का टिकट कटवाने के पीछे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की भूमिका पर सवाल उठ रहा है। क्योंकि ऐसा होने से जहां प्रदेश में एक और सत्ता केन्द्र उभरने की संभावना की भ्रूण हत्या हो गई और अगर भाजपा यह उपचुनाव हारी तो भीतरघात का संशय नरोत्तम पर ही जाएगा। यानी एक तीर से दो शिकार वाली स्थिति है। कुल मिलाकर हरदम चमकता चेहरा लेकर घूमने वाले नरोत्तम की राजनीति का यह दि एंड हो सकता है। विडंबना यह है कि नरोत्तम किसी जमाने में खुद को राज्य का सबसे बड़े ब्राह्मण चेहरे के रूप में स्थापित करने में लगे थे। कमलनाथ सरकार गिराने में जिन लोगों की सक्रिय भूमिका रही, उनमें नरोत्तम का भी नाम था। इसके पहले वो प्रदेश के गृह मंत्री भी रहे और यश और धन दोनो खूब कमाया।

दूसरी तरफ अपने ही विधानसभा क्षेत्र में उनकी छवि लगातार खराब होती गई। कुछ लोग तो उन्हें 'दतिया का डॉन' तक कहने लगे थे। 2018 का विस चुनाव भी वो महज ढाई हजार वोटों से जीत पाए थे। इस बार भी दतिया के कांग्रेस विधायक राजेन्द्र भारती का बैंक फ्रॉड केस में चुनाव रद्द होना भी नरोत्तम के भाग्य का छींका नहीं बन सका।दरअसल नरोत्तम मिश्रा दतिया में आयातित नेता हैं। वो मूलतरू ग्वालियर के हैं और शुरू में डबरा विधानसभा सीट से जीतते रहे हैं। परिसीमन में जब डबरा सीट आरक्षित हो गई तो नरोत्तम दतिया इसलिए चले आए, क्योंकि यह अनारक्षित होने के साथ—साथ यहां ब्राह्मण वोटरों की संख्या काफी है। धीरे—धीरे नरोत्तम ने यहां अपनी सल्तनत कायम कर ली। उसी अनुपात में वो लोगों के बीच अलोकप्रिय भी होते गए। पुत्र प्रेम के कारण जिन लोगों का राजनीतिक कॅरियर प्रभावित हुआ, नरोत्तम भी उन्हीं में से एक हैं। लगातार चुनाव जीतने वाले नेता अक्सर यह मुगालता पाल लेते हैं कि वो अजेय और मर्जी के मालिक हैं।

नतीजा यह हुआ कि 2023 में जब पूरे प्रदेश में भाजपा की लहर चल रही थी, नरोत्तम पौने 8 हजार वोटों से अपनी सीट कांग्रेस के राजेन्द्र भारती के हाथों गवां बैठे। चुनाव नतीजों के पहले तक नरोत्तम मंत्री तो




ठीक, मुख्यमंत्री बनने का सुनहरा सपना पाले थे।उनकी देह भाषा भी उसी अंदाज में हिलोरें लेने लगी थीं। लेकिन लोकतंत्र में होनी जनता के हाथ में होती है। मजबूत इच्छाशक्ति और अपार महत्वाकांक्षा के बाद भी जनता ने ही दगा दे दिया और नरोत्तम को घर बैठना पड़ा।

नरोत्तम मिश्रा को यह मुगालता भी रहा कि 'हाईकमान' से अच्छी ट्यूनिंग के चलते उनका ठीक से पुनर्वास होगा। लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ। न सत्ता में न संगठन में। मारक मुस्कान के बावजूद करनी का बोझ वो सिर से कभी न उतार सके।

नरोत्तम का टिकट क्यों कटा?

नरोत्तम का टिकट क्यों कटा, इसको लेकर कई तरह की थ्योरियां में हैं। पहला तो यह कि पार्टी की राज्य इकाई ने नरोत्तम के इसरार पर उपचुनाव के लिए एक ही नाम आला कमान को भेजा था, लेकिन आला कमान ने अपने स्तर पर अलग से फीड बैक लिया और पाया कि नरोत्तम पे दांव लगाना जोखिम भरा है। अर्थात उनके प्रति आम जनता में नाराजी अभी भी कम नहीं हुई है। हालांकि इस सीट पर हार—जीत से मोहन यादव सरकार की सेहत पर फर्क नहीं पड़ता। लेकिन सीट हारने से यह गलत संदेश जरूर जाता कि ये सरकार उपचुनाव जीत नहीं पाती, क्योंकि पिछले साल वह विजयपुर उपचुनाव हार चुकी है। तब पार्टी का एक सिटिंग मंत्री उपचुनाव हार गया था। भाजपा और खुद मोहन यादव भी यह जोखिम उठाने के लिए शायद ही तैयार होते।

संभव है कि मुख्यमंत्री ने राज्य इकाई के जरिए नरोत्तम का नाम भिजवा दिया हो, लेकिन बाद में चौनल टू के जरिए कटवा भी दिया हो। लेकिन यह भी अनुमान है। लेकिन इसे बल इस बात से मिलता है कि टिकट कटने पर दतिया में नरोत्तम समर्थकों द्वारा काटे बवाल के बाद मुख्यमंत्री और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने नरोत्तम को मुख्यमंत्री निवास तलब किया और तगड़ी 'समझाइश' दी। उसके बाद नरोत्तम के तेवर ठंडे पड़ गए। सार्वजनिक रूप से कहा कि जो पार्टी कहेगी, वह शिरोधार्य है।

सत्तर पार नेताओं के लिए संदेश

मप्र में इस वक्त जिन नेताओं के हाथ में कमान है, उनमें कतिपय अपवाद को छोड़ दें तो ज्यादातर साठ के आसपास या उससे कम उम्र के ही हैं। सत्तर की टच लाइन को छूने या पार करने वालों के लिए साफ संदेश है कि वो नए लोगों के लिए सिंहासन खाली करें, मुख्यमंत्री पद की ख्वाहिश पालना तो बहुत दूर की बात है।ऐसे लोग चाहिए जो पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष 45 वर्षीय नितिन नबीन को बेझिझक 'सर' कह सकें। लिहाजा वर्तमान केन्द्रीय मंत्री और पूर्व में लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान को छोड़ दें तो 'डेंजर झोन' में चल रहे तमाम नेताओं को भाजपा नेतृत्व ने रेड सिग्नल दे दिया है।

यानी मानकर चलें कि यह उनकी यह पारी सत्ता की राजनीति में आखिरी हो सकती है। इस डेंजर झोन में नरेन्द्र सिंह तोमर,कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद पटेल आदि प्रमुख हैं। इसमें नरोत्तम मिश्रा भी शुमार हो गए हैं। कुलमिलाकर शिवराज की पीढ़ी के तमाम लोग अब चार धाम की यात्रा की तैयारी कर लें। इस समूचे घटनाक्रम ने 66 वर्षीय नरोत्तम मिश्रा के राजनीतिक भविष्य पर ही सवालिया निशान लगा दिया है। जिस कारण से उनका टिकट काटा बताया जाता है, उसके निदान में तो बरसों लग सकते हैं, तब तक प्रदेश की राजनीति में बहुत सारा पानी बह चुका होगा। इस बीच नया नेतृत्व अपनी जड़ें जमा ले तो नरोत्तम के पास हरिभजन के अलावा कुछ भी नहीं बचेगा।वैसे भी तीन दशकों से राजनीति में रचे पगे नरोत्तम के लिए 'रिटायरमेंट' की जिंदगी जीना मुश्किल है। जिस तरह उनके समर्थकों ने दतिया में बवाल काटा, उसके बाद संगठन में उनके पुनर्वास की संभावना पर भी पत्थर पड़ गए हैं। दूसरे, अपने पुत्र को राजनीति में आगे बढ़ने की योजना का रायता भी फैलता दिख रहा है। नरोत्तम के सियासी सितारे चमकने की संभावना इसलिए भी न्यून थी, क्योंकि मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव राजनीतिक महत्वाकांक्षा की रेस में एक और खिलाड़ी को गवारा नहीं कर सकते थे। कोई भी मुख्यमंत्री नहीं चाहता। चूंकि पार्टी में अपेक्षकृत नई पीढ़ी के लिए मैदान साफ किया जा रहा है, इसलिए उसमें नरोत्तमों की बलि तो चढ़नी ही है। फिर अंतिम नतीजा जो हो। दतिया की घटना इस संगठनात्मक संकल्प का पायलेट प्रोजेक्ट माना जाना चाहिए। धीरे—धीरे यह अन्य राज्यों पर भी लागू होगा। इस सफाई योजना को संघ का समर्थन भी प्राप्त है। अब देखना यह है कि बात कितनी दूर तलक जाती है।

# पीके का बड़ा दांव हाई—प्रोफाइल बांकीपुर ही क्यों?

राजनीतिक रणनीतिकार के रूप में कई नेताओं को चुनाव जिताने वाले प्रशांत किशोर (पीके) ने जब अपनी पहली चुनावी पारी के लिए पटना की हाई—प्रोफाइल बांकीपुर विधानसभा सीट चुनी, तो यह फैसला केवल एक उम्मीदवार के चुनाव लड़ने की घोषणा नहीं रहा। इसने बिहार की राजनीति में कई सवाल खड़े कर दिए।आखिर पीके ने अपेक्षाकृत सुरक्षित सीट के बजाय भाजपा के सबसे मजबूत गढ़ों में से एक को ही क्यों चुना? क्या यह केवल चुनावी दांव है, या इसके पीछे कोई बड़ी राजनीतिक रणनीति और दूरगामी संदेश छिपा है?पहली नजर में यह फैसला जोखिम भरा लगता है, क्योंकि बांकीपुर पिछले तीन दशकों से भारतीय जनता पार्टी का अभेद्य गढ़ माना जाता है। लेकिन राजनीति में कई बार सबसे कठिन चुनावी मैदान ही सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश देने का माध्यम बन जाते हैं। पीके का यह निर्णय भी उसी श्रेणी में देखा जा रहा है।

बांकीपुर केवल एक विधानसभा क्षेत्र नहीं है, बल्कि बिहार की सत्ता और राजनीति का प्रतीक है। राजधानी पटना के मध्य स्थित इस क्षेत्र में सरकारी अधिकारी, व्यापारी, पेशेवर वर्ग, शिक्षित मध्यमवर्ग, युवा और प्रभावशाली मतदाता बड़ी संख्या में रहते हैं। यहां की चुनावी चर्चा पूरे राज्य में सुनी जाती है। इसीलिए बांकीपुर का चुनाव अक्सर पूरे बिहार की राजनीतिक दिशा का संकेतक भी माना जाता है।

सुरक्षित सीट नहीं, वैचारिक पहचान की तलाश

पीके यदि चाहते तो किसी ऐसे विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ सकते थे, जहां जातीय समीकरण उनके पक्ष में हों या जहां जन सुराज का संगठन अपेक्षाकृत मजबूत हो। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय उन्होंने भाजपा के सबसे मजबूत गढ़ को चुनौती देने का फैसला किया। यह निर्णय बताता है कि उनकी प्राथमिकता केवल विधानसभा पहुंचना नहीं, बल्कि अपनी राजनीति की वैचारिक पहचान स्थापित करना है।

एक साथ कई राजनीतिक संदेश

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो पीके एक साथ कई संदेश देना चाहते हैं। पहला संदेश यह कि वे सुरक्षित राजनीति नहीं करेंगे। भारतीय राजनीति में अक्सर बड़े नेता आसान




और सुरक्षित सीट चुनते हैं, ताकि हार का जोखिम कम रहे। पीके ने इसके विपरीत सबसे कठिन मुकाबला चुना। यदि वे अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो उनकी राजनीतिक विश्वसनीयता बढ़ेगी, और यदि जीत जाते हैं तो यह बिहार की राजनीति में बड़े बदलाव का संकेत माना जाएगा।

तीसरे विकल्प की संभावनाओं की परीक्षा

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू भाजपा को सीधी चुनौती देना है। बांकीपुर लंबे समय से भाजपा का मजबूत किला रहा है। यदि जन सुराज यहां भाजपा को कड़ी टक्कर देती है, तो यह संदेश जाएगा कि बिहार में पारंपरिक राजनीतिक ध्रुवीकरण के बीच तीसरी राजनीतिक ताकत भी उभर रही है। इससे जन सुराज को राज्य के अन्य शहरी क्षेत्रों में भी राजनीतिक ऊर्जा मिल सकती है।

जातीय राजनीति से आगे का प्रयोग

पीके की राजनीति का एक महत्वपूर्ण आधार जाति आधारित राजनीति के विकल्प की बात करना रहा है। बांकीपुर की सामाजिक संरचना इस दृष्टि से उनके लिए उपयुक्त मानी जा रही है। यहां चुनाव केवल जातीय समीकरणों पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि विकास, प्रशासन, शिक्षा, रोजगार और शहरी सुविधाओं जैसे मुद्दे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि वे यहां इन मुद्दों पर मतदाताओं का समर्थन हासिल करते हैं, तो यह उनके राजनीतिक मॉडल की पहली बड़ी परीक्षा होगी।

रणनीतिकार से जननेता बनने की चुनौती

इसके अलावा, यह चुनाव स्वयं पीके की व्यक्तिगत विश्वसनीयता की भी परीक्षा है। पिछले डेढ़ दशक में उन्होंने कई राजनीतिक दलों और नेताओं के लिए सफल चुनावी रणनीतियां तैयार कीं। लेकिन विरोधियों का तर्क रहा कि रणनीति बनाना और स्वयं जनता का विश्वास जीतना दो अलग—अलग बातें हैं। बांकीपुर से चुनाव लड़कर पीके इसी सवाल का जवाब देना चाहते हैं कि क्या वे केवल सफल रणनीतिकार हैं या स्वयं भी जननेता बनने की क्षमता रखते हैं।

कार्यकर्ताओं के मनोबल का सवाल

इस निर्णय का एक मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है। राजनीति में प्रतीकों का महत्व बहुत अधिक होता है। यदि कोई नया दल अपने पहले बड़े चुनाव में सबसे कठिन सीट पर लड़ने का साहस दिखाता है, तो कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ता है। जन सुराज के लिए यह चुनाव केवल एक सीट का चुनाव नहीं, बल्कि संगठन निर्माण, कार्यकर्ताओं के आत्मविश्वास और भविष्य की राजनीति का आधार भी बन सकता है।

जोखिम भी, अवसर भी

हालांकि इस रणनीति में जोखिम भी कम नहीं है। यदि पीके बड़ी हार का सामना करते हैं तो विरोधी इसे उनकी राजनीतिक अस्वीकृति के रूप में प्रस्तुत करेंगे। दूसरी ओर, यदि वे सम्मानजनक प्रदर्शन करते हैं या जीत दर्ज करते हैं, तो यह बिहार की राजनीति में उनके लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हो सकता है।

# बाकू की पवित्र अग्नि और भारत का प्राचीन संबंध

बाकू के बाहरी इलाके में स्थित सुराखानी के हवादार मैदानों में, एक शांत लौ आज भी उस सभ्यतागत स्मृति को रोशन करती है, जो कैस्पियन सागर के तटों से लेकर भारतीय उपमहाद्वीप तक फैली हुई है। प्राचीन अतेशगाह अग्नि मंदिर में कभी धरती से प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली यह अग्नि मात्र एक भौगोलिक घटना नहीं थी। सदियों से, यह भारतीय आस्था, गतिशीलता और आध्यात्मिक कल्पना के लिए एक पवित्र आधार रही है, जो इसकी भौगोलिक उत्पत्ति से कहीं आगे तक फैली हुई है।

अपने संलग्न प्रांगण, केंद्रीय वेदी और सादगीपूर्ण कक्षों वाले इस मंदिर परिसर में आज भी स्पष्ट भारतीय छाप दिखाई देती है– नटराज से संबंधित मूर्तियों से लेकर गणेश जी का आह्वान करने वाले शिलालेखों तक– जो यह दर्शाते हैं कि यह महज एक आकस्मिक संपर्क क्षेत्र नहीं बल्कि एक व्यापक पवित्र भूगोल का जीवंत विस्तार था। प्रवेश कक्ष, जिसके ऊपर एक कमरा या अतिथि कक्ष बना हुआ है, कभी हिंदू और सिख तीर्थयात्रियों के ठहरने का स्थान हुआ करता था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सुराखानी न केवल एक पूजा स्थल था बल्कि एक सक्रिय तीर्थ केंद्र भी था जो लंबी दूरी के व्यापार और धार्मिक मार्गों से जुडघ हुआ था।

ऐतिहासिक प्रमाणों से पता चलता है कि ससानियन काल (224–651 ईस्वी) के दौरान बाकू को भगवान के नाम से जाना जाता था जिसे बागवान या बागुआन भी लिखा जाता था। माना जाता है कि यह नाम वैदिक लोगों द्वारा दिया गया था जो इस क्षेत्र में आए या बसे थे। इसी नाम से देश का आधुनिक नाम अजरबैजान भी बना है (अजर– अग्नि, बेगुआन – ईश्वर)। नामकरण की यह निरंतरता पश्चिम की ओर अग्नि–पूजा करने वाले आर्य समूहों के प्रारंभिक आंदोलनों द्वारा आकारित गहरे सांस्कृतिक आदान–प्रदान की ओर इशारा करती है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले जलकार्बन के छिद्र, जिनसे [illegible]



की पुष्टि करता प्रतीत होता था, जिससे पवित्र स्थलों का एक वर्ग अस्तित्व में आया जहां अग्नि के माध्यम से दिव्य अनुभव किया जाता था।

ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग द्वारा प्रकाशित प्रो. के.टी.एस. साराओ की एक रोचक पुस्तक, ‘बाकू का शाश्वत अग्नि मंदिर’, इस बहुआयामी इतिहास का विस्तृत दस्तावेजीकरण करती है। यह अध्ययन अतेशगाह को भारतीय अग्नि पूजा की निरंतरता में रखता है और सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पूर्व के खंडहरों पर निर्मित वर्तमान संरचना को ज्वाला–जीभ वाली देवी ज्वाला जी से जुडघे एक बहुत पुराने पवित्र भूभाग के हिस्से के रूप में पहचान दिलाता है।

इस तीर्थस्थल से जुडघी पौराणिक कथाएं इसे भारतीय पवित्र कल्पना में दृढघ्ता से स्थापित करती हैं। परंपरा के अनुसार, जब सती ने आत्मदाह किया, तो शोकग्रस्त शिव उनके शरीर को पूरे ब्रह्मांड में ले गए, जब तक कि विष्णु ने हस्तक्षेप नहीं किया और उसे कई पवित्र स्थलों में विभाजित नहीं कर दिया। जिन स्थानों पर देवी को शाश्वत ज्वाला के रूप में प्रकट होते देखा गया है, उनमें ज्वालामुखी मंदिर, शक्तिनगर, मुक्तिनाथ और बाकू में सुरखानी शामिल हैं। सुरखानी सहित इन स्थलों पर, देवी को सात या नौ ज्वालाओं के रूप में प्रकट होते देखा गया है, जो निरंतर जलती रहने वाली दिव्य अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।प्राकृतिक अग्नि और पवित्र आस्था के इस अंतर्संबंध ने बाकू को पश्चिमी काशी के रूप में विख्यात कर दिया। अविभाजित भारत के हिंदू–विशेष रूप से मुल्तान के व्यापारी और तीर्थयात्री–कठिन मार्गों से न केवल पूजा–अर्चना के लिए, बल्कि कुछ मामलों में सचेत रूप से मृत्यु को स्वीकार करने के लिए भी यात्रा करते थे, जहां प्राकृतिक रूप से उत्पन्न पवित्र अग्नि का उपयोग करके दाह संस्कार किया जाता था और सुरखानी को मुक्ति की एक व्यापक आध्यात्मिक यात्रा का अंतिम बिंदु माना जाता था।

वर्तमान मंदिर परिसर इन घुमंतू समुदायों की सक्रियता को दर्शाता है। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बाकू में बसे पंजाब के हिंदू खत्री व्यापारियों द्वारा पुनर्निर्मित, यह मंदिर न सिर्फ एक धार्मिक स्थल के रूप में, बल्कि व्यापारिक नेटवर्क द्वारा समर्थित एक संस्थागत केंद्र के रूप में भी कायम रहा। चौबीस खिडघ्की रहित कोठरियों से घिरा प्रांगण, मठ और सराय दोनों के रूप में कार्य करता था, जिसमें तपस्वी और व्यापारी समुदाय निवास करते थे, जिन्होंने पवित्र अग्नि परंपराओं को जीवित रखा।

संवत 1762 से 1873 (1705–1816 ईस्वी) के इसके शिलालेख इस निरंतरता के कुछ सबसे ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। देवनागरी, गुरुमुखी, लांडा और फारसी में पाए गए ये शिलालेख अक्सर गणेश जी की स्तुति से शुरू होते हैं और इनमें ज्वाला जी के नाम से कई बार उल्लेख किया गया है। इन शिलालेखों में स्वास्तिक चिह्न बार–बार दिखाई देते हैं, जो इस स्थल की धार्मिक शब्दावली को सुदृढघ करते हैं और छिटपुट आगमन के बजाय एक निरंतर और संगठित धार्मिक उपस्थिति का संकेत देते हैं।यह तीर्थस्थल सिख धर्म से भी महत्वपूर्ण रूप से जुडघ हुआ है। गुरु नानक देव जी से संबंधित शिलालेख उनकी चौथी उदासी के दौरान 1511 और 1521 ईस्वी के बीच बाकू की उनकी यात्रा का स्मरण कराते हैं, जब वे मध्य पूर्व, फारस और मध्य एशिया की यात्रा पर थे।बाद में यह मंदिर उदासी तपस्वियों की देखरेख में आ गया, जिनकी धार्मिक अवधारणा में अग्नि के प्रति श्रद्धा के साथ–साथ व्यापक भारतीय पूजा पद्धति भी शामिल थी। इसमें त्रिशक्ति की पूजा (त्रिशूल, ओम और स्वस्तिक के माध्यम से प्रतीक के रूप में) और शिव, विष्णु, सूर्य, दुर्गा और गणेश को समाहित करने वाली पंचायतन परंपरा शामिल थी, जो मंदिर को एक साधारण तीर्थस्थल के बजाय एक पूर्ण विकसित भारतीय पवित्र स्थल के रूप में स्थापित करती है।

इस क्षेत्र में अग्नि पूजा की प्राचीनता को शास्त्रीय संदर्भों द्वारा रेखांकित किया गया है, जो यह सुझाव देते हैं कि सिकंदर महान ने वर्तमान परिसर के निर्माण से बहुत पहले, चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान इस क्षेत्र में प्राकृतिक शाश्वत अग्नि का अवलोकन किया था।समय के साथ, बदलती राजनीतिक परिस्थितियों ने मंदिर के भाग्य को बदल दिया। कैस्पियन क्षेत्र में अरब आक्रमणों के कारण इस तीर्थस्थल सहित कई गैर–इस्लामी पूजा स्थलों का विनाश या धीरे–धीरे उपेक्षा हुई। मध्यकाल के उत्तरार्ध में इसका पुनर्निर्माण धार्मिक पुनरुत्थान के साथ–साथ राजनीतिक आवश्यकता और आर्थिक विवशता से भी प्रभावित था, जिससे स्थानीय हिंदू समुदायों को एक संकुचित लेकिन फिर भी महत्वपूर्ण पवित्र स्थान को पुनः प्राप्त करने का अवसर मिला।

उन्नीसवीं शताब्दी तक यह परंपरा धीरे–धीरे खत्म होने लगी थी। अक्टूबर 1888 में रूस के जार अलेक्जर्ध्डर तृतीय (।समर्•दकमत ⅠⅠⅠ) का इस स्थल पर आयोजित अंतिम हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों में से एक को देखने के लिए किया गया दौरा, कभी अत्यंत समृद्ध और जीवंत रहे इस आध्यात्मिक केंद्र के अंतिम चरण का प्रतीक बन गया। इस मंदिर ने हेलेना ब्लावत्स्की जैसी हस्तियों को भी आकर्षित किया, जो थियोसोफिकल सोसाइटी की संस्थापक और बाद में एनी बेसेंट की गुरु बनीं, जो इसकी भौगोलिक स्थिति से परे इसके व्यापक दार्शनिक और बौद्धिक आकर्षण को दर्शाती हैं।बीसवीं शताब्दी में सोवियत औद्योगिक गतिविधियों द्वारा अंतर्निहित गैस भंडारों का दोहन किए जाने के कारण प्राकृतिक ज्वालाएं अंततः बुझ गईं। आज दिखाई देने वाली ज्वालाएं आगंतुकों के लिए पाइपलाइन के माध्यम से गैस द्वारा संरक्षित हैं, फिर भी वे प्राकृतिक रूप से उत्पन्न अग्नि द्वारा निर्मित एक प्राचीन पवित्र परिदृश्य की स्मृति को जीवंत रखती हैं।हाल के वर्षों में, इस स्थल का राजनयिक और सांस्कृतिक महत्व फिर से बढघ गया है। 2019 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू और विदेश मंत्री एस. जयशंकर की यात्राओं ने भारत–अजरबैजान संबंधों में इसके स्थान को और मजबूत किया है। बहुपक्षीय मंचों पर अजरबैजान के लिए भारत का समर्थन, जिसमें 2025–29 के लिए यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के कार्यकाल के लिए भारत का समर्थन और उसके पशुपालन नामांकन का अनुमोदन शामिल है, एक ऐसी साझेदारी को दर्शाता है जो साझा विरासत और समकालीन सहयोग दोनों से मजबूती प्राप्त करती है।पर्यटन इस रिश्ते में एक जीवंत सेतु के रूप में उभरा है, जिसमें भारत अजरबैजान आने वाले पर्यटकों का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है, जिनमें से कई अतेशगाह के बहुस्तरीय अतीत और इसकी स्थायी सभ्यतागत गूँज से आकर्षित होते हैं।सुराखानी में आज जो कुछ भी खडघ है, वह महज एक पुनर्निर्मित स्मारक नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत अभिलेखागार हैकृ जहाँ भूविज्ञान और धर्मशास्त्र, व्यापार और भक्ति, स्मृति और कूटनीति का संगम होता है। अतेशगाह की लौ की स्थिर चमक में, बाकू की भगवान के रूप में पूर्व पहचान अतीत के अवशेष के रूप में नहीं, बल्कि एक साझा इतिहास के स्मरण के रूप में प्रकट होती है जो वर्तमान को प्रकाशित करता रहता है।

# देव की डायरी: नो वाइन, नो शाइन बस यहां एक ही नियम है कि कोई नियम नहीं..!

घटना बहुत छोटी है। ड्यूटी खत्म हो चुकी थी। कुछ बिजली कर्मी ठेके पर पहुंचे। इच्छा थी कि दिन का समापन एक प्याले के साथ हो। सेल्समैन ने घडघी देखी और कहा, "समय निकल गया है। अब बिक्री नहीं होगी। नियम यही है।" यहां से कहानी समाप्त हो जानी चाहिए थी। लेकिन भारत में नियम कभी कहानी का अंत नहीं करते। वे केवल अगला अध्याय शुरू करते हैं। अगले अध्याय का शीर्षक था–"जब सुरूर पर रोक होगी, तो उजाले पर भी विचार किया जाएगा।"

सरकारी नौकरी केवल वेतन नहीं देती। वह आदमी को कुछ ऐसे अधिकार भी देती है, जिनका जिक्र किसी सेवा नियमावली में नहीं मिलता। इन अधिकारों की खोज कर्मचारी धीरे–धीरे करता है। सहारनपुर के कुछ बिजली कर्मियों ने तो इस अदृश्य संविधान का प्रायोगिक प्रदर्शन कर ही दिया। उन्होंने साबित किया कि सरकारी कटर केवल तार नहीं काटता, कभी–कभी लोकतंत्र की बची–खुची लाज भी काट देता है।

उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि सत्ता केवल संसद, सचिवालय और मंत्रालयों में नहीं रहती। उसका एक छोटा सा शाखा कार्यालय हर उस आदमी के भीतर खुल जाता है, जिसके पास किसी दूसरे आदमी का काम रोक देने की ताकत होती है। कुर्सी छोटी हो सकती है, अधिकार नहीं।

घटना बहुत छोटी है। ड्यूटी खत्म हो चुकी थी। कुछ बिजली कर्मी ठेके पर पहुंचे। इच्छा थी कि दिन का समापन एक प्याले के साथ हो। सेल्समैन ने घडघी देखी और कहा, "समय निकल गया है। अब बिक्री नहीं होगी। नियम यही है।"

नियम शुरू करते हैं नया अध्याय

यहां से कहानी समाप्त हो जानी चाहिए थी। लेकिन भारत में नियम कभी कहानी का अंत नहीं करते। वे केवल अगला अध्याय शुरू करते हैं। बेचारा सेल्समैन नहीं जानता था कि सरकारी आदमी के सामने नियम का नाम लेना वैसा ही है, जैसे पुजारी को मंत्र सिखाना। नियम सरकारी दफ्तरों में पूजा की वस्तु है। सुबह सलाम किया जाता है और शाम तक किसी फाइल के नीचे दबा दिया जाता है। बाहर का आदमी यदि नियम याद दिला दे, तो उसे अधिकार क्षेत्र में घुसपैठ माना जाता है। इस अपमान का बदला तत्काल नहीं लिया गया। सरकारी व्यवस्था में बदला भी प्रक्रिया से गुजरता है। कर्मचारी घर गए, विचार हुआ। सीढघी का इंतजाम हुआ।

दो मोटरसाइकिलें तैयार हुईं। फिर रात के अंधेरे में लोकतंत्र पूरी तैयारी के साथ खंभे पर चढघ गया। ठेके की बिजली काट दी गई।मुझे सबसे अधिक संतोष इस बात का हुआ कि विभाग में अभी भी इतनी फुर्ती बची हुई है। लोग बरसों से शिकायत करते आए हैं कि सरकारी कर्मचारी देर से आते हैं, धीरे चलते हैं, फाइलें रेंगती हैं। यह घटना उस भ्रम का अंत करती है। मन लग जाए तो सरकारी आदमी रात में भी खंभे पर चढघ जाता है। बस काम का चुनाव उसका अपना होना चाहिए।ठेका संचालक हैरान था। वह कह रहा था कि बिजली का बिल पूरा जमा था। अरे भाई, बिल तो कागज का टुकडघ है। असली बिल तो वह सद्भावना है, जो विभाग के साथ समय–समय पर जमा करनी पडघ्ती है। तुमने ‘अमृत’ देने से मना किया, उन्होंने ‘करंट’ रोक दिया। हिसाब बराबर।

पुलिस सीसीटीवी देखकर पता लगा रही थी कि तार काटने वाले सचमुच बिजली विभाग के ही थे या नहीं। मुझे पुलिस की मासूमियत पर दया आती है। अंधेरे में सही तार काटना कोई शौकिया कला नहीं है। यह वर्षों की विभागीय साधना से प्राप्त सिद्धि है। हर पेशे का अपना हस्ताक्षर होता है। उस्ताद तबला पहचानता है, सर्जन नस पहचानता है और बिजली वाला... वह अंधेरे में भी सही तार पहचान लेता है।विभाग अभी शांत है। संभव है, वह इस घटना को अनुशासनहीनता नहीं, अतिरिक्त कार्यनिष्ठा मान रहा हो। आखिर कर्मचारी ड्यूटी खत्म होने के बाद भी विभागीय कौशल का प्रदर्शन कर रहे थे। आज के समय में इतनी लगन कहां मिलती है?

या फिर शायद वे इस बात पर मंथन कर रहे हों कि ‘नो वाइन, नो शाइन’ यानी ‘शराब नहीं, तो बिजली नहीं’ को विभाग की नई गाइडलाइन में शामिल किया जाए या नहीं। इस पूरे प्रसंग में सबसे दुखी यदि कोई है, तो वह नियम है। बेचारा हर जगह अपमानित होता है। आम आदमी के सामने वह शेर बनकर खडघ रहता है। लेकिन जैसे ही किसी अधिकार संपन्न व्यक्ति के सामने पहुंचता है, उसकी आवाज पतली हो जाती है। वह खुद किनारे हट जाता है, मानो कह रहा हो– "भाइयो, मुझे बीच में मत लाइए। मेरी इतनी हैसियत नहीं है।"इस घटना ने देश को एक नया प्रशासनिक सूत्र दिया है। नियम और अधिकार में जब भी टकराव होगा, जीत नियम की नहीं, अधिकार की होगी, क्योंकि नियम के पास केवल किताब होती है। अधिकार के पास सीढघी, कटर और विभागीय पहचान।

वैसे यह किसी एक शहर की खबर नहीं है। यह उस व्यवस्था का चरित्र है, जहां अधिकार सरकारी होता है, लेकिन उसका उपयोग धीरे–धीरे निजी हो जाता है। नागरिक इसे दुर्घटना समझता है। विभाग इसे प्रक्रिया कहता है और हमारे यहां प्रक्रिया की उम्र हमेशा नागरिक से लंबी होती है।

कुछ दिन बाद सब अपने–अपने काम पर लौट जाएंगे। ठेके पर फिर रोशनी होगी।विभाग फिर जनता की सेवा करेगा। पुलिस फिर किसी दूसरे सीसीटीवी में सच खोजेगी। नागरिक फिर समय पर बिल भरेंगे और यह मानकर जीते रहेंगे कि इस बार शायद उनका उजाला सुरक्षित रहेगा।

## एक पेड़ माँ के नाम अभियान से जुड़ा अर्पण फाउंडेशन, पदाधिकारियों ने किया वृक्षारोपण और दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

लखनऊ। एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत अर्पण फाउंडेशन के कार्यालय परिसर में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था की अध्यक्ष आरती पाण्डेय, सचिव अद्भुत पाण्डेय एवं कोषाध्यक्ष रिद्धिमा पाण्डेय ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण और हरित भविष्य के निर्माण का संकल्प लिया। कार्यक्रम में संस्था के संस्थापक भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आरती पाण्डेय ने कहा कि वृक्ष प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं। पर्यावरण को सुरक्षित रखने और आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ जीवन देने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं है, उनका संरक्षण और नियमित देखभाल भी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

संस्था के सचिव अद्भुत पाण्डेय ने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम‘ अभियान प्रकृति और मातृत्व के सम्मान का प्रतीक है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी माँ के नाम एक पौधा लगाकर उसे वृक्ष बनने तक संरक्षित रखने का संकल्प ले, तो पर्यावरण संरक्षण का यह अभियान एक व्यापक जनआंदोलन बन सकता है। एक्जिक्यूटिव ब्रांच कोषाध्यक्ष रिद्धिमा पाण्डेय ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए वृक्षारोपण सबसे प्रभावी उपायों में से एक है। हमें केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उनके संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों को हरित और स्वच्छ वातावरण मिल सके।

## टोल प्लाजा के पास दुकान का शटर उखाड़ ले गए चोर, दुकान में रखा लाख का सामान भी गायब

हैदरगढ़ बाराबंकी । कोतवाली हैदरगढ़ अंतर्गत टोल प्लाजा पर स्थित किराना दुकान पर शटर उखाड़ कर हुई चोरी में चोर40 हजार रुपएकी नकदी के अलावा लाखों रुपए कीमत का पान मसाला गुटखा व सिगरेट चुरा ले गए। पीडित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की माँग की है।

कोतवाली क्षेत्र के करौंदी गांव निवासी धर्मेंद्र पाल की अंशिका पाल किराना स्टोर के नाम से बारा टोल प्लाजा के निकट शायपुर मोड़ पर दुकान स्थित हैं। बताया कि शनिवार शाम घर से अचानक फोन आया कि अम्मा की तबियत खराब है। जिसके बाद दुकान बंद करके वह मां के इलाज के लिए अस्पताल पहुंच गए, परन्तु इलाज में देर लग जाने से वापस दुकान पर नहीं पहुंच सके। बताया कि रात्रि 3 बजे पुलिसकर्मी उनके घर पहुंचे और जानकारी दी।

## उपचुनावः बिहार से मध्यप्रदेश तक, उम्मीदवार चयन पर उठे सवाल

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के नेतृत्व में पार्टी ने बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे दो बडघे राज्यों में पहली बार अपना मुख्यमंत्री देने का राजनीतिक कीर्तिमान बनाया। इससे संगठनात्मक नेतृत्व की उनकी क्षमता को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। लेकिन उसी नेतृत्व के सामने अब बिहार के बांकीपुर



और मध्यप्रदेश के दतिया विधानसभा उपचुनाव चुनौती बनकर उभरे हैं।बिहार के बांकीपुर में नामांकन के बाद उम्मीदवार बदलना पडघा, जबकि मध्यप्रदेश के दतिया में नरोत्तम मिश्रा का टिकट काटने से पार्टी के भीतर असंतोष खुलकर सामने आ गया। ऐसे में बडघी चुनावी सफलताओं के बाद उपचुनावों में सामने आई ये मुश्किलें नितिन नवीन की संगठनात्मक रणनीति की भी परीक्षा बन गई हैं।

नितिन नवीन के सामने अब पहली बडघी चुनावी परीक्षा बिहार और मध्यप्रदेश के उपचुनाव हैं। यह परीक्षा केवल दो विधानसभा सीटों पर जीत–हार की नहीं, बल्कि उनके नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता और राजनीतिक निर्णयों की भी है। चुनावी राजनीति में उम्मीदवारों का चयन सबसे कठिन और संवेदनशील प्रक्रिया माना जाता है। एक गलत फैसला न केवल चुनावी समीकरण बिगाडघ सकता है, बल्कि संगठन के भीतर असंतोष भी पैदा कर सकता है। फिलहाल भाजपा को दोनों राज्यों बिहार और मध्यप्रदेश में इसी चुनौती का सामना करना पडघ रहा है।

### बांकीपुर में अंतिम समय का बदलाव

बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीट भाजपा का परंपरागत गढघ रही है। 1995 से यह सीट लगातार भाजपा के पास है और नितिन नवीन स्वयं भी इसी सीट से कई बार विधायक रहे। उनके राज्यसभा जाने के बाद यह सीट खाली हुई और उपचुनाव की नौबत आई।भाजपा ने पहले भारतीय जनता युवा मोर्चा के नेता अभिषेक कुमार सिन्हा (बंटी) को उम्मीदवार बनाया। उन्होंने वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में नामांकन भी दाखिल कर दिया। लेकिन अगले ही दिन उन्होंने ‘पारिवारिक कारणों’ का हवाला देते हुए अपना नामांकन वापस ले लिया। इसके बाद भाजपा को तत्काल नीरज कुमार सिन्हा को नया उम्मीदवार घोषित करना पडघा। नामांकन के बाद उम्मीदवार बदलना किसी भी बडघे राजनीतिक दल के लिए असामान्य स्थिति मानी जाती है और इसने पार्टी की उम्मीदवार चयन प्रक्रिया को लेकर कई सवाल खडघे कर दिए हैं।बांकीपुर का मुकाबला इसलिए भी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है क्योंकि यहां जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर पहली बार विधानसभा चुनाव लडघ रहे हैं। राष्ट्रीय जनता दल ने रेखा गुप्ता को दोबारा मैदान में उतारा है। ऐसे में भाजपा के लिए यह सीट केवल अपनी परंपरागत पकडघ बनाए रखने का सवाल नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की राजनीतिक प्रतिष्ठा से भी जुडघ गई है।

### दतिया में नरोत्तम मिश्रा की नाराजगी

मध्यप्रदेश की दतिया विधानसभा सीट पर भाजपा का फैसला भी विवादों में है। पार्टी ने पूर्व गृह मंत्री और तीन बार के विधायक नरोत्तम मिश्रा को टिकट देने के बजाय आशुतोष तिवारी को उम्मीदवार बनाया। इसके बाद मिश्रा समर्थक खुलकर विरोध में उतर आए। दतिया में प्रदर्शन हुए, राजमार्ग जाम किया गया और स्थानीय संगठन में असंतोष खुलकर सामने आया। कुछ स्थानीय पदाधिकारियों ने इस्तीफे तक दे दिए।

नरोत्तम मिश्रा लंबे समय तक दतिया की राजनीति का प्रमुख चेहरा रहे हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में उनकी हार के बाद यह माना जा रहा था कि उपचुनाव उनके लिए वापसी का अवसर होगा। लेकिन पार्टी ने पीढघीगत बदलाव और नए नेतृत्व पर दांव लगाया, जिससे स्थानीय स्तर पर असंतोष पैदा हो गया।

### उम्मीदवार चयन ही सबसे बडघी चुनौती

उपचुनावों में राष्ट्रीय मुद्दों की तुलना में स्थानीय समीकरण अधिक प्रभावी होते हैं। उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि, जातीय–सामाजिक संतुलन, संगठन में उसकी स्वीकार्यता और कार्यकर्ताओं का उत्साह परिणाम तय करने में बडघी भूमिका निभाते हैं। इसलिए टिकट वितरण में हुई छोटी–सी चूक भी बडघे राजनीतिक नुकसान का कारण बन सकती है।

नितिन नवीन के सामने चुनौती केवल चुनाव जिताने की नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करने की भी है कि उम्मीदवार चयन के कारण संगठन में असंतोष न फैले। बांकीपुर और दतिया की घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है ।


**आवश्यक सूचना**

मैं प्रदीप कुमार सिंह, पुत्र स्व० उदय शंकर सिंह, निवासी 448/1359, झब्बन की बगिया, ठाकुरगंज, लखनऊ, का हूं। मेरा उत्तर प्रदेश टीईटी (प्राथमिक) 2014 का अंकपत्र (मार्कशीट) दिनांक 01.07.2024 को वास्तव मे कहीं ,खो गया है। जिसका रोल नंबर 2910301736 एवं पंजीकरण संख्या 2900266155 है। यदि किसी को उक्त अंकपत्र मिले तो कृपया मोबाइल नंबर 7054222228 पर सूचित करें। सूचना देने वाले का आभारी रहूँगा।

प्रदीप कुमार सिंह,
पुत्र स्व० उदय शंकर सिंह, निवासी 448/1359,
झब्बन की बगिया,
ठाकुरगंज, लखनऊ।

# गौ माता को राष्ट्रीय दर्जा दिलाने की मांग लेकर निकले शंकराचार्य का दरियाबाद में भव्य स्वागत

## सनातन और गौ संरक्षण पर किया जागरूक

संवाददाता

रामसनेहीघाट (बाराबंकी)। गौ माता को राष्ट्रीय गौ माता घोषित कराने की मांग को लेकर 81 दिवसीय प्रदेश यात्रा पर निकले ज्योर्तिमठ (उत्तराखंड) के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज का रविवार को दरियाबाद विधानसभा क्षेत्र में जगह–जगह भव्य स्वागत किया गया। यात्रा के दौरान आयोजित सभाओं में उन्होंने गौ संरक्षण, सनातन संस्कृति और भारतीय परंपराओं के संरक्षण का संदेश देते हुए लोगों से जागरूक होने का आह्वान किया।

दरियाबाद विधानसभा क्षेत्र में प्रवेश करते ही देवीगंज चौराहे पर पूर्व मंत्री अरविंद सिंह गोप के नेतृत्व में बडघी संख्या में श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों ने पुष्पवर्षा, माल्यार्पण एवं जयघोष के साथ शंकराचार्य का स्वागत किया। यहां आयोजित जनसभा में उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में गौ माता केवल एक पशु नहीं, बल्कि आस्था, सेवा और सनातन परंपरा का प्रतीक हैं। उन्होंने गौ माता को राष्ट्रीय गौ माता घोषित करने की मांग दोहराते हुए कहा कि इसके लिए समाज को संगठित होकर जनजागरण करना होगा।

इसके बाद यात्रा भिटरिया चौराहा स्थित छोटी हनुमानगढधी पहुंची, जहां कांग्रेस नेता अब्दुल्ला शेर खान ने समर्थकों के साथ उनका स्वागत किया। इस दौरान शंकराचार्य ने लोगों से संवाद करते हुए गौ सेवा, धर्म और संस्कृति के संरक्षण को प्रत्येक सनातनी का कर्तव्य बताया।यात्रा आगे बढघ्ते हुए भिटरिया स्थित एक सभागार पहुंची, जहां पूर्व ब्लॉक प्रमुख एवं समाजवादी पार्टी नेता संतोष कुमार वर्मा के नेतृत्व में उनका अभिनंदन किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच आरती उतारी गई और पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए शंकराचार्य ने कहा कि समाज को असली और दिखावटी सनातन आचरण के बीच अंतर समझना होगा। उन्होंने कहा कि यदि देश में करोडघें लोग स्वयं को हिंदू कहते हैं, तो गौ माता को राष्ट्रीय दर्जा दिलाने की मांग भी उसी मजबूती से उठनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि गौ संरक्षण के नाम पर राजनीति तो हुई, लेकिन धरातल पर अपेक्षित कार्य नहीं हुए, जिसके कारण आज गोवंश कई स्थानों पर उपेक्षा का शिकार है।

उन्होंने समलैंगिक संबंधों, लिव–इन रिलेशन और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जुडघ्े विषयों पर भी अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही श्रीराम मंदिर से जुडघ्े मुद्दों का उल्लेख करते हुए कहा कि सनातन परंपराओं और धार्मिक मूल्यों की रक्षा समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने लोगों से आगामी समय में ऐसे निर्णय लेने की अपील की, जो गौ संरक्षण, भारतीय संस्कृति और सनातन मूल्यों को मजबूत करें।

यात्रा के पूरे मार्ग में श्रद्धालुओं ने विभिन्न स्थानों पर पुष्पवर्षा कर शंकराचार्य का स्वागत किया। कार्यक्रम में संत–महात्माओं के साथ विभिन्न राजनीतिक दलों के जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता और बडघी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। धार्मिक उत्साह और जनसहभागिता के बीच संपन्न यह कार्यक्रम क्षेत्र में चर्चा का विषय बना रहा।

# स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के हैदरगढ पहुंचने पर सपा और कांग्रेसी नेताओं ने किया भव्य स्वागत

संवाददाता

हैदरगढ बाराबंकी। ज्योतिषपीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के हैदरगढघ् पहुंचने पर श्रद्धालुओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। इस दौरान सांसद तनुज पुनिया समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक राममगन रावत, युवा नेता गौतम रावत सपा नेता पप्पू सिद्दीकी सांसद प्रतिनिधिघ् ब्लॉक अध्यक्ष राजकुमार सिंह आशुतोष अवस्थी टिंकू श्रुति अवस्थी नगर अध्यक्ष रोहित मिश्रा आशीष साहू डिंपल सिंह प्रधान अलगू सिंह प्रदीप सिंह सहित सैकडघें कार्यकर्ता और श्रद्धालु मौजूद रहे।

शंकराचार्य के आगमन पर समर्थकों ने माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया तथा आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम स्थल पर बडघी संख्या में लोगों की मौजूदगी से उत्साह का माहौल रहा। श्रद्धालुओं ने धार्मिक जयघोष के साथ उनका स्वागत किया। इसके बाद शंकराचार्य गौतौना स्थित सपा नेता गौतम रावत के आवास पर पहुंचे, जहां गौतम रावत ने उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। इस दौरान आयोजित सभा को संबोधित करते हुए शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने कहा कि गाय हम सबकी माता है और भारतीय संस्कृति तथा सनातन परंपरा का आधार है। उन्होंने कहा कि सरकार से उनकी मांग है कि गाय को दी गई सामान्य पशु की उपाधि समाप्त कर उसे "गौ माता" का दर्जा दिया जाए।

शंकराचार्य ने कहा कि जब तक यह मांग पूरी नहीं होती, तब तक उनका संघर्ष जारी रहेगा। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं से पूछा कि क्या वे इस अभियान और संघर्ष में उनके साथ खडघ्े हैं। इस पर मौजूद लोगों ने एक स्वर में समर्थन जताते हुए गाय को गौ माता घोषित किए जाने की मांग का समर्थन किया।

उन्होंने कहा कि जो सरकार स्वयं को हिंदुत्व की समर्थक बताती है, उसे गाय को गौ माता का दर्जा दिलाने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुडघ मुद्दा है। इस अवसर पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं ने शंकराचार्य का सम्मान करते हुए उनके विचारों को समाज के लिए प्रेरणादायी बताया।

# सडक न होने से जासेपुर के ग्रामीण परेशान, सांसद तनुज पुनिया को सौंपा ज्ञापन

## 150 मीटर इंटरलॉकिंग/सीसी रोड निर्माण की मांग, बरसात में आवागमन हुआ दुश्वार

संवाददाता

हैदरगढघ् बाराबंकी । विकास खंड हैदरगढघ् की ग्राम पंचायत जासेपुर में वर्षों से सडघ्क की समस्या झेल रहे ग्रामीणों ने रविवार को बाराबंकी सांसद तनुज पुनिया को ज्ञापन सौंपकर 150 मीटर इंटरलॉकिंग अथवा सीसी रोड निर्माण कराए जाने की मांग की।

ग्रामीणों ने बताया कि गांव में श्री रामसरन रावत के आवास से श्री जमील अहमद के आवास तक लगभग 150 मीटर लंबा मार्ग आज भी कच्चा पडघ हुआ है। बरसात के मौसम में मार्ग पर जलभराव और कीचडघ हो जाने से लोगों का आवागमन बाधित हो जाता है। स्थिति यह है कि पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है।

ग्रामीणों के अनुसार सबसे अधिक परेशानी महिलाओं, बुजुर्गों, स्कूली बच्चों और मरीजों को उठानी पडघ्ती है। कई बार बच्चे स्कूल जाते समय फिसलकर चोटिल हो जाते हैं, वहीं आपात स्थिति में मरीजों को अस्पताल पहुंचाने में भी गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पडघ्ता है।

ग्रामीणों ने सांसद को दिए गए ज्ञापन में कहा कि यह मार्ग गांव के लोगों के दैनिक आवागमन का प्रमुख रास्ता है तथा मालिन बस्ती को भी जोडघ्ता है। मार्ग के पक्के निर्माण से सैकडघें ग्रामीणों को सुरक्षित और सुगम आवागमन की सुविधा मिल सकेगी।

ग्रामीणों ने जनहित को देखते हुए शीघ्र इंटरलॉकिंग अथवा सीसी रोड निर्माण की स्वीकृति दिलाने की मांग की। इस दौरान सांसद तनुज पुनिया से समस्या के शीघ्र समाधान की अपेक्षा जताई गई। ग्रामीणों ने उम्मीद व्यक्त की कि उनकी वर्षों पुरानी मांग पर जल्द सकारात्मक कार्रवाई होगी और बरसात के दिनों में होने वाली परेशानी से राहत मिलेगी।

# झोलाछाप के इंजेक्शन के बाद दो वर्षीय मासूम की मौत, ग्रामीणों ने चिकित्सक को पकड पुलिस के हवाले किया

संवाददाता

राम सनेही घाट (बाराबंकी)। दरियाबाद कोतवाली क्षेत्र के निमतियापुर गांव में कथित झोलाछाप चिकित्सक के इलाज के बाद दो वर्षीय मासूम की मौत हो जाने से गांव में हडघ्कंप मच गया। घटना से नाराज ग्रामीणों ने चिकित्सक को पकडघ्कर एक घर में बंद कर दिया और पुलिस को सूचना दे दी। मौके पर पहुंची पुलिस आरोपी चिकित्सक अनुज को हिरासत में लेकर थाने ले गई। वहीं, मासूम के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।जानकारी के अनुसार, निमतियापुर निवासी अमित वर्मा के दो वर्षीय पुत्र आयांश पटेल के सिर पर दाने निकल आए थे। परिजन उसे उपचार के लिए गांव में संचालित एक क्लीनिक पर ले गए। आरोप है कि चिकित्सक ने

बच्चे को इंजेक्शन लगाया, जिसके कुछ ही देर बाद उसकी तबीयत अचानक बिगडघ् गई। घबराए परिजन तत्काल उसे एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।मासूम की मौत की खबर मिलते ही गांव में आक्रोश फैल गया। ग्रामीणों ने चिकित्सक अनुज को पकडघ्कर पुलिस के हवाले कर दिया। स्थानीय लोगों का आरोप है कि करीब एक वर्ष पूर्व भी इसी क्लीनिक पर इलाज के दौरान एक व्यक्ति की मौत हुई थी, इसके बावजूद कार्रवाई न होने से क्लीनिक का संचालन जारी रहा।सूचना पर देर रात करीब एक बजे पुलिस मौके पर पहुंची और चिकित्सक को हिरासत में लेकर जांच शुरू कर दी। दरियाबाद कोतवाली प्रभारी धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। रिपोर्ट आने के बाद आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि समाचार लिखे जाने तक परिजनों की ओर से कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई थी। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

## पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी है पौध रोपण

जैदपुर बाराबंकी। बढते प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के बीच पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए नगर पंचायत जैदपुर में वृहद वृक्षारोपणअभियान चलाया गया।रविवार को सात दिवसीय वृहद वृक्षारोपण महाअभियान के तहत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जैदपुर परिसर में बडघ्े पैमाने पर पौधरोपण किया गया।कार्यक्रम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ. जगदीश प्रसाद, नगर पंचायत जैदपुर के अधिशासी अधिकारी राम जनक तिवारी और सभासदों ने पौधे लगाकर परिसर को हरा–भरा बनाने का संकल्प लिया।इस दौरान अधिशासी अधिकारी राम जनक तिवारी ने जैदपुर क्षेत्र में चार हजार पौधे लगाने का संकल्प लेते हुए लोगों से पर्यावरण संरक्षण और पौधों की देखभाल में सहयोग की अपील की।कार्यक्रम मे यासिर कैफी,सभासद ताहिर अंसारी,सायम मेहंदी,अल्ताफ अंसारी,शुभम कुमार सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

## वृक्षारोपण कर निभाये प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी:सुनील सिंह

संवाददाता

हैदरगढघ् बाराबंकी ।विकास खंड त्रिवेदीगंज के अंतर्गत ग्राम पंचायत मंझार में एक में पेडघ् माँ के नाम अभियान चलाया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व ब्लाक प्रमुख सुनील सिंह ने हिस्सा लिया।

इस अवसर पर पूर्व ब्लाक प्रमुख सुनील सिंह कहा कि वृक्ष केवल पर्यावरण की रक्षा ही नहीं करते, बल्कि आने वाली पीढध्यिों के लिए स्वच्छ व सुरक्षित भविष्य की नींव भी रखते हैं। आइए, हम सभी अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर उनके संरक्षण का संकल्प लें और प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी प्रियंका सिंह भाजपा मंडल अध्यक्ष सचिन वर्मा प्रधान सतीश यादव, भाजपा अनुसूचित मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष अतुल सिंह रावत, प्रधान मोहम्मदपुर अभय प्रताप सिंह गुड्डू, बबलू सिंह बिजौली, पंचायत सचिव दीपक वर्मा, सहायक विकास अधिकारी ऋषिपाल सिंह, रोजगार सेवक संघ अध्यक्ष रामसजीवन यादव, रोजगार सेवक सरोज यादव, मनोज सिंह चिलूला सहित भारी संख्या में ग्रामवासियों ने विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया व गत वर्षों में लगाए गए पौधों की प्रगति एवं विकास देखकर सभी ग्राम प्रधान एवं एवं सचिव को बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं।

## राजरानी रावत बनी जिला पंचायत की प्रशासक

### कार्यालय पहुँच कर कार्यभार किया ग्रहण

बाराबंकी। शासन से प्राप्त शासनादेश के अनुपालन में जिलाधिकारीधजिला मजिस्ट्रेट, बाराबंकी द्वारा राजरानी रावत, निवर्तमान अध्यक्ष, जिला पंचायत को प्रशासक, जिला पंचायत बाराबंकी नामित किया गया। जिसके कम में राजरानी रावत द्वारा प्रशासक जिला पंचायत का कार्यभार ग्रहण किया गया।

राजरानी रावत ने मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देते हुए आश्वासन दिया कि प्रत्येक योजनाओं से लाभार्थियों को लाभान्वित करते हुए विकास कार्यों को ज्यादा से ज्यादा कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि जैसे 5 साल से विकास कार्य होते आ रहे हैं उसी प्रकार आगे भी विकास कार्यों से लाभार्थियों को लाभान्वित किया जाएगा।

जिसके उपरान्त कार्यालय जिला पंचायत परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

उक्त कार्यक्रम में अंगद कुमार सिंह, माननीय सदस्य विधान परिषद, राम सिंह उर्फ मुल्लन वर्मा, जिलाध्यक्ष भाजपा, आशुतोष कुमार अपर मुख्य अधिकारी, पल्लवी यादव, कार्य अधिकारी, राजेश सिंह, प्रशासनिक अधिकारी, अजय मिश्रा एवं गौरव कुमार, अवर अभियन्तागण तथा अन्य जिला पंचायत के अन्य अधिकारीध्कर्मचारी उपस्थित रहे।

## अघोषित बिजली कटौती से परेशान उपभोक्ता

रामनगर बाराबंकी। विद्युत की लचर व्यवस्था के चलते कस्बा रामनगर समेत ग्रामीण क्षेत्रों मे उपभोक्ताओं का धैर्य जवाब देने लगा है।अघोषित बिजली कटौती और लो वोल्टेज की समस्या ने लोगों को घोर कठिनाईयों का सामना है।महादेवा धाम रामनगर कस्बा और आसपास के गांवों में रविवार दोपहर बाद से बिजली व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई। देर रात तक उपभोक्ता लो वोल्टेज और बार–बार बिजली की आवाजाही से परेशान रहे।लेकिन विभाग समस्या का समाधान नहीं कर सका।भीषण उमस और गर्मी के बीच हालात ऐसे रहे कि पंखे और कूलर चलना तो दूर एल ई डी बल्ब तक पूरी रोशनी नहीं दे सके।लो वोल्टेज के कारण अन्य विद्युत उपकरण भी ठप रहे।

# उत्तर प्रदेश पशुपालन विभाग मिनिस्ट्रियल इम्प्लाइज एसोसिएशन का द्विवार्षिक अधिवेशन एवं चुनाव सम्पन्न

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पशुपालन विभाग मिनिस्ट्रियल इम्प्लाइज एसोसिएशन के द्विवार्षिक अधिवेशन एवं चुनाव का आयोजन लोकतांत्रिक एवं शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। चुनाव में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। निर्वाचन परिणामों के अनुसार प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर श्री गौरव वर्मा ने 361 मत प्राप्त कर शानदार विजय हासिल की। वहीं प्रांतीय उपाध्यक्ष पद पर श्री आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने 371 मत प्राप्त कर विजय प्राप्त की।नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने संगठन के सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे कर्मचारी हितों की रक्षा, संगठन को और अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनाने तथा विभागीय कर्मचारियों की सेवा संबंधी समस्याओं के समयबद्ध समाधान के लिए पूरी निष्ठा, पारदर्शिता एवं समर्पण के साथ कार्य करेंगे।चुनाव परिणाम घोषित होने के उपरांत संगठन के पदाधिकारियों, कर्मचारियों एवं समर्थकों ने विजयी प्रत्याशियों का माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया तथा उज्ज्वल एवं सफल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ दीं।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक आरती पाण्डेय द्वारा सांई आफसेट प्रिन्टर्स, ४० वासुदेव भवन भातखण्डे संगीत महाविद्यालय के पीछे, कैसरबाग लखनऊ से छपवाकर एमआईजी २/३७६ रश्मिखंड शारदानगर आशियाना लखनऊ उ० प्र० से प्रकाशित।
सम्पादक
आरती पाण्डेय
ek-
9807059191- 9026560178
Email-
adbhutsamachar@gmail.com
adbhutsamachar@hotmail.com
सभी विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।